Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

November -2019

SPECIAL ISSUE-CCIV

Human Rights Present Scenario and Challenges & Humanities

Executive Editor:
Prof. Virag S. Gawande
Director,
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Guest Editor
Dr. Rajendra S.Korde
Arts, Commerce College,Warwat Bakal ,
Tq.Sangrampur Dist. Buldhana

Chief Editor
Mr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

RESEARCH JOURNEY
MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue
ISSN : 2348-7143
November 2019

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	महाराष्ट्र ग्रामसंस्था : एक आकलन — डॉ. विनोद उत्तमराव भालेराव	10
2	सामाजिक कादंबरी व अरुण साधूंची 'बहिष्कृत' दलित—ग्रामीण जीवनाचा अविष्कार — श्री. गिरीधर शंकरराव काचोळे	14
3	रविंद्रनाथांच्या गीतांजलीमधील मृत्यूची रूपे — डॉ. प्रविण कारंजकर	19
4	भारतातील वृध्दांची लोकसंख्या व वृध्दांची समस्या — श्री आर. व्ही. कसारे	23
5	कर्जतचे श्री संत सद्गुरू गोदड महाराज — **प्रा. मोरे भास्कर निवृत्ती**	29
6	ग्रंथालय : कौशल्य विकास — श्री सुरेन्द्र दि.अवथरे	33
7	***तहान : संक्रमण काळातील ग्रामीण जीवन*** — ***प्रा. महेंद्र झालके***	38
8	बालकामगार आणि हक्क — **प्रा. सुधीर नारायणराव देशमुख**	42
9	अन्नसंरक्षण — **डॉ.प्रा.विभा छ. घोडखांदे**	46
10	शंकरराव कोल्हे यांचे जलसिंचन विषयक कार्य — प्रा.झरेकर आर.एस.	51
11	लोकतांत्रिक भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता — प्रा. डॉ. किशोर बी. वासनिक	57
12	मार्क्सवादी समीक्षाविचार — प्रा. डॉ.विजय रूपराव राऊत	61
13	धान उत्पादन खर्चाचे व उत्पन्नाचे विश्लेषणात्मक अध्ययन — प्रा. डॉ.ए.बी.पटले	65
14	मेळघाट प्रदेशातीलपुनर्वसित वसाहतीच्या स्वरुपावर व्याघ्र प्रकल्पाच्या प्रभावाचे भौगोलिक विश्लेषण — **डॉ. प्रमोद म. बावणे**	71
15	मी रांगेतच उभा आहे : भूषण रामटेके : एक चिकित्सक अध्ययन — प्रा.डॉ.प्रशांत धनवीज	75
16	व्यक्तिमत्वाचा खेळात दिसणारा कार्यमान — डॉ. उदय दा. मेंडुलकर	81
17	गलिच्छ वस्ती भारतातील एक सामाजिक समस्या — प्रा. विशाखा मानकर	85
18	आदर्श गाव योजना आणि सामाजीक विकास — प्रा. कमलेश मानकर	90
19	पर्यावरण आणि मानवी हक्क — प्रा. डॉ. नलिनी भगत	95
20	मानवाधिकार : दहशतवादी कृत्य — डॉ. अजय कारूजी मेश्राम	99
21	महिला आरक्षण विधेयक और राजनैतिक दलो की भूमिका — प्रा. एच. पारधी	103
22	डॉ.सुरेशचन्द्र शुक्ल का हिन्दी नाट्य साहित्य में योगदान — डॉ.परदेशी पी. बी.	106

CamScanner

RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue
ISSN : 2348-7143
November 2019

डॉ.सुरेशचन्द्र शुक्ल का हिन्दी नाट्य साहित्य में योगदान

डॉ.परदेशी पी. बी.
दादा पाटील महाविद्यालय,कर्जत जि–अहमदनगर पि.कोड.४१४४०२

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने अपने सहित्य सृजन की यात्रा काव्य से प्रारंभ की उसके बाद एकांकी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, बालसाहित्य और समीक्षात्मक लेखन कार्य करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. चन्द्र ने अपनी साहित्य विकास यात्रा के संदर्भ में स्वयं लिखा है, "मैंने अपनी साहित्य यात्रा काव्य से प्रारंभ की थी। १९५५ ई. से नाटक की ओर प्रवृत्त हुआ, और दस वर्ष एकांकी नाटक लिखने के बाद, पूर्णाकार नाटकों के प्रणयन में लगा।"[१] उनके प्रारंभिक नाटक एकांकियों का परिवर्तित रूप है लेकिन बाद में उन्होंने स्वतंत्र नाटकों का सृजन किया है। डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल एक कुशल प्रयोगशील नाटककार एवं सशक्त रंगान्वेशक है। नाटकीय स्थितियों एवं रंगमंचीय आवश्यकताओं की उन्हें सूक्ष्म पहचान हैं। हिन्दी नाट्य साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर विकास श्रृंखला से सुरेशचन्द्र शुक्ल को जोड़ने का श्रेय उनके प्रयोगशील नाटकों को है। उनके प्रयोगशील नाटकों में रंगधर्मी प्रवृत्तियों की सही तलाश हुई है। डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल और उनके प्रयोगशील नाटक, हिन्दी रंग संभावनाओं से पूरी तरह जुड़े हुए हैं। इससे नाट्य साहित्य समृद्ध हुआ है। डॉ. परवीन अख्तर जी ने सुरेशचन्द्र शुक्ल के नाट्य साहित्य के योगदान के संदर्भ में लिखा है," जिस प्रकार अंधकार को चीरकर प्रकाश स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त करता है। ठीक उसी प्रकार 'चन्द्र' रूपी डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल ने नामानुरूप अपनी शीतलता बिखेरते हुए नाट्य साहित्य के क्षेत्र में अपना पथ सृजित किया।"[२]

अब तक सुरेशचन्द्र शुक्ल के इक्कीस पूर्णाकार नाटक प्रकाशित हुए है उनकी नाट्य कृतियों का परिचय कालक्रमानुसार इस प्रकार हैं–

'भूमि की ओर' (१९७६); 'आकाश झुक गया' (१९७७); 'बदलते रूप'(१९७८); 'भावना के पीछे' (१९७८); 'शादी का चक्कर'(१९७८); 'कुत्ते'(१९७९); 'भस्मासुर अभी जिन्दा है' (१९८०); 'समवेत' (१९८१); 'प्रेरणा' (१९८१); 'अक्षयवट' (१९८३); 'लड़ाई जारी है' (१९८५); 'बात एक हर्ष की' (१९९९); 'अर्द्धनारीश्वर' (२००४); 'कब्रगाह'(२००५); 'कस्तुरी कुण्डलि बसै'(२००५); 'आत्मकथा पाषाणी की' (२००५); 'एक था महामंत्री' (२००५); 'भूषण भनत' (२०१०); 'अमरसेनानी' (२०१०); 'नरकेसरी' (२०१०); 'यह कैसे हुआ?'(२०१०)

सुरेशचन्द्र शुक्ल का 'भूमि की ओर' नाटक ग्रामीण समस्याओं पर आधारित रंगमंचीय सामाजिक नाटक है। इस नाटक में बाहर और गांव की स्थिति की ओर संकेत कर भूमि की ओर चलने का अवाहन किया है। एक पिछड़े गाँव को आधार बनाकर उसे विकास की ओर उन्मुख करके एक आदर्श गाँव का चित्र प्रस्तुत किया है।

सुरेशचन्द्र शुक्ल के 'बदलते रूप' नाटक संग्रह में तीन पारिवारिक नाटक– 'भावना के पीछे', 'शादी का चक्कर' और 'बदलते रूप' संग्रहित हैं। यह तीनों नाटक महानगर के निम्न–मध्य स्तर के छोटे परिवारों की स्थिति से संबंधित है। इनमें पति–पत्नी के स्वातंत्र्य, उनके संबंध और वैवाहिक प्रसंग तथा पारिवारिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं को उभारा है।

'अक्षयवट' सुरेशचन्द्र शुक्ल का एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रयोगधर्मी नाटक है। इस नाटक में प्राचीन संदर्भों को नवीन घटनाक्रमों का संवाहक बनाया है। इस नाटक में चाणक्य को निर्मित करनेवाली स्थितियों का विश्लेषण किया गया है। सुरेशचन्द्र शुक्ल के 'समवेत' नाट्य संग्रह में 'प्रेरणा' और 'समवेत' यह दो ऐतिहासिक नाटक संग्रहित हैं। ये दोनों नाटक मराठा–इतिहास पर आधारित हैं। 'प्रेरणा' नाटक में मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम और अद्वितीय नृत्यांगणा मस्तानी के अमर प्रेम कथानक के रूप में दृश्यांकित है। 'समवेत' नाटक में माधवराव पेशवा का राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति और एकता की भावना का चित्रण है।

'आकाश झुक गया' नाटक में डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल ने 'मैं' और 'हम' वृत्ति के संघर्ष को दिखाते हुए टूटते हुए मानवीय मूल्यों का यथार्थ चित्रण किया है।

CamScanner